DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS+SUB)

LECTURE-5

असामान्य व्यवहार की अवधारणा

(concept of abnomality)

' Normal' पद में उपसर्ग 'AB' जोरकर 'ABNORMAL' अर्थात 'असामान्य' पद का निर्माण हुआ है|

अर्थात असामान्य वह है जो सामान्य नहीं है या सामान्य से परे अथवा भिन्न है|

रिगर ,(1998) के अनुसार,

असामान्य व्यवहार एक ऐसा व्यवहार होता है जो सामाजिक रूप से अमान्य दुःखदायी एवं विकृत संज्ञान के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है |चुंकि ऐसे व्यवहार से व्यक्ति को सामान्य समायोजन में कठिनाई होती है, इसलिए इसका स्वरूप कुसमायोजी भी होता है |

बारलो एवं डूरंड (1999) के अनुसार,

असामान्य व्यवहार व्यक्ति के भीतर मनोवैज्ञानिक दुष्क्रिया की स्थिति होती है जो कार्यो में व्यथा या हानी से साहचार्यित होता है तथा एक ऐसी अनुक्रिया होती है जो प्रतिनिधिक या सांस्कृतिक रूप से प्रत्याशित नहीं होती है|

असामान्य व्यवहार के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है |

(1)यदि किसी व्यक्ति की बुध्दि सामान्य व्यक्ति के बुध्दि से कम रहती है अर्थात उसका i.q -70 से कम होता है तो वह मंद बुध्दि का अर्थात असामान्य समझा जाता है |

(कोई व्यक्ति अगर 25 वर्ष का है और उसका व्यवहार 10 वर्ष के बच्चे जैसा है तो उसे मंद बुध्दि का अर्थात असामान्य समझा जाता है)

(2)दक्षिण भारत में चचेरे –फुफेरे भाई –बहन में शादी को सामान्य समझा जाता है लेकिन उत्तर भारत में इसी शादी को असामान्य समझा जाता है |

हिंदु समाज में चचेरे–फुफेरे भाई –बहन में शादी होना असामान्य माना जाता है जबकि मुस्लिम समाज में इसी को सामान्य माना जाता है |

अर्थात एक ही व्यवहार एक समाज या संस्कृति में सामान्य हुआ और दूसरे समाज में असामान्य हुआ |

(3)कोई व्यक्ति को तैरना अच्छी तरह से आता है और उसे पता है की पानी में जाने के बाद कुछ नहीं होगा ,फिर भी वह पानी में जाने से डरता है तो इस तरह के व्यवहार को असामान्य व्यवहार कहा जायेगा |

(4) ऐसा व्यवहार जो सामाजिक मानको एवं मूल्यों का विरोधी होता है जैसे –चोरी करना ,हत्या करना ,बलात्कार करना आदि असामान्य व्यवहार कहलाते है |

सामान्य एवं असामान्य में अंतर (DIFFERENT BETWEEN NORMAL AND ABNORMAL)

"NORMAL" शब्द लैटिन के NORMA शब्द से बना है जिसका अर्थ है 'बढई का स्केल' जिस तरह से बढई अपने स्केल का प्रयोग एक मानक के रूप में कर के यह निश्चित करता है की किस परिस्थिति में क्या सामान्य मापन होगा ,ठीक उसी अर्थ में सामान्य व्यवहार होता है की किस परिस्थिति में हमें कौन सा व्यवहार करना चाहिए | सामान्य व्यवहार में नैतिक एवं अनैतिक का ज्ञान होता है कौन सा व्यवहार किस परिस्थिति में करना चाहिए लेकिन असामान्य व्यवहार में कुछ ऐसा होता है की वह सामान्य से भिन्न दीखता है | उनमे गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों ही अंतर दीखता है –

मात्रात्मक अंतर से तात्पर्य वैसे गुणों की मात्रा में होता है जो दोनों तरह के व्यवहारों में दिखाई देता है परन्तु कम और ज्यादा की मात्रा में|

सामान्य व्यवहार एवं असामान्य व्यवहार में निम्नलिखित अंतर है

(1)सूझपूर्ण व्यवहार –(INSIGHTFUL BEHAVIOUR) सामान्य व्यवहार हमेशा सूझपूर्ण अर्थात समझदारी वाला होता है |एक सामान्य व्यक्ति को इस बात का स्पष्ट समझ होता है की वह क्या कर रहा है? कैसे कर रहा है ? उसे कौन-सा व्यवहार किस परिस्थिति में करना चाहिये और किस परिस्थिति में नहीं करना चाहिए ?

ऐसे व्यक्तियों को नैतिक – अनैतिक एवं सही-गलत का भी यथेष्ट ज्ञान रहता है |ठीक उसके विपिरीत असामन्य व्यवहार में इन गुणों की कमी पाई जाती है |असामान्य व्यक्ति को नैतिक एवं अनैतिक में अंतर तथा सही एवं गलत में अंतर की सूझ-बूझ नहीं रहती है प्रत्येक कार्य जिसे वह करता है उसे सही लगता है चाहे वह कितना भी गलत एवं अनैतिक क्यों ना हो |असामान्य व्यवहार में अनिर्णायकता की अवस्था स्पष्ट दिखती है जबकि सामान्य व्यक्ति का व्यवहार पूर्णतः निर्णायक एवं ठोस होता है |

(2)**संतुलित सामाजिक समायोजन** – सामान्य व्यक्ति के परिवार में सदस्यों के साथ,पड़ोसियों एवं अपने सहयोगियों के साथ सौहार्दपूर्ण सामाजिक सम्बन्ध होता है फलस्वरूप उसका सामाजिक समायोजन पुर्णतः संतुलित होता है| ऐसे व्यक्ति समाज के नियमो एवं रीती –रिवाजो का आदर करते है और उसी के अनुकूल एक सौहार्दपूर्ण सामाजिक सम्बन्ध बनाये रखने की कोशिश करते है |

असामान्य व्यक्ति सामाजिक नियमो एवं रीती-रिवाजो की अनदेखी कर के व्यवहार करता है ऐसे व्यक्तियों की दुनिया अपनी निजी होती है जो वास्तविक सामाजिक वातावरण से भिन्न होता है |ऐसे व्यक्तियों में सामाजिक समायोजन की समस्याए तीव्र होती है उनमे सहयोग की भावना और मिलजुल कर काम करने की भावना का सदा आभाव रहता है |

(3)**साम्वेगिक परिपक्वता एवं नियंत्रण**- सामान्य व्यक्तियों का साम्वेगिक व्यवहार संतुलित एवं नियंत्रित होता है | दुसरे शब्दों में,ऐसे व्यक्तियों को अपने संवेग की अभिव्यक्ति एवं उसके स्तर पर पूर्ण नियंत्रण रहता है | वह परिस्थिति के अनुकूल ही क्रोध , प्रेम , डर , आदि जैसे संवेगों की अभिव्यक्ति करता है | उसके संवेगात्मक व्यवहार में स्थिरता एवं धैर्यता दिखलाई परती है दूसरी तरफ

असामान्य व्यक्तियों के साम्वेगिक व्यवहार में अस्थिरता एवं अपरिपक्वता दिखलाई परता है | ऐसे व्यक्तियो को अपने संवेग पर नियंत्रण भी नहीं रहता है और परिस्थिति के अनुकूल संवेग अभिव्यक्ति भी नहीं होती है | इस तरह से असामान्य व्यक्तियों का व्यवहार सामान्य व्यक्तियों के व्यवहार से साम्वेगिक रूप से पूर्णत: भिन्न होता है|

4 **वास्तविकता का ज्ञान** – सामान्य व्यक्तियों को वास्तविकता का पूर्ण ज्ञान होता है उनका व्यवहार हमेशा सामाजिक नियमो एवं रीती – रिवाजो के अनुकूल ही होता है | उन्हें कल्पना में जीना एकदम पसंद नही है इसके विपरीत असामान्य व्यक्तियों का व्यवहार काल्पनिक एवं अवास्तविक होता है |असामान्य व्यक्तियों को यह ज्ञान नही रहता है की समाजिक आदर्श या समाजिक नियम क्या है तथा उनकी हकीकते क्या है |उन्हें तो बस अपनी काल्पनिक दुनिया से मतलब होता है जिसमे वे लम्बी उड़ाने भरते रहते है उनका व्यवहार भ्रम,विभ्रम व्यामोह संभ्रांति से भरा रहता है |

(5)**विचित्र एवं उटपटांग व्यवहार** – सामान्य व्यक्ति का व्यवहार ना तो विचित्र होता है और ना ही उटपटांग ही होता है ऐसे व्यक्तियों के सोचने एवं व्यवहार करने के ढंग में एक संगतता एवं एकरूपता पायी जाती है |इसके व्यवहार में स्पष्ट नियमितता एवं यथर्थाता पायी जाती है |संक्षेप में सामान्य व्यवहार पुर्णतः विवेकी ,तार्किक एवं प्रासंगिक होता है |दूसरी तरफ ,असामान्य व्यवहार बेतुका एवं उटपटांग होता है|ऐसा व्यवहार बिना सिर-पैर का होता है इन व्यवहारों से यह स्पष्ट रूप से झलकता है की वे सामाजिक मान्यताओ के विपरीत है एवं असंगत है | असामान्य व्यक्तियों का व्यवहार आलस्य विरोधी भी होता है एवं अपने गलतियों के लिए किसी तरह का पाश्चाताप भी उनमे नहीं होता है |

(6)**अपनी देखभाल**–सामान्य व्यक्तियों का व्यवहार अपनी देख-भाल एवं सुरक्षा के लिए पर्याप्त होता है |वह ऐसा व्यवहार करता है जिसे उसके अहंग (ego) को चोट ना पहुंचे तथा उसका मानसिक स्वास्थ्य बना रहे है |वह हर संभव कोशिश करता है की उसका व्यक्तित्व संतुलित एवं स्वस्थ बना रहे | दूसरी तरफ असामान्य व्यक्तियों के व्यवहार में उतनी कुशलता नहीं होती है की वह अपनी देखभाल कर सके एवं अपने आप को पर्याप्त सुरक्षित रख सके |

इस तरह से हम देखते है की सामान्य व्यवहार तथा असामान्य व्यवहार में काफी अंतर है |उपर्युक्त विवरण से यह भी स्पष्ट है की इन दोनों तरह के व्यवहारों का अंतर गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनों ही है|